समता की साधना के लिए तेस्विता आवश्यक : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 8 जून।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पांच प्रकार के शरीर में चौथे प्रकार का है तेजस शरीर है जो सूक्ष्म शरीर है। सूक्ष्म शरीर होने के साथ सदा साथ रहने वाला, एक गति से दूसरी गति में जाने वाला है। आहार आदि के पाचन में इस शरीर की भूमिका रहती है।

जिसमें शक्ति, सामर्थ्य नहीं है वह व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता है। जिस प्रकार एक सांप को छेड़ा जाता है और वह फन उठा लेता है उसी प्रकार आदमी को झकझोरा जाए उसे प्रेरणा दी जाए तो उसमें तेजस्विता उभरती है। यदि व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला नहीं है, झकझोरने वाला नहीं है तो व्यक्ति का निर्माण नहीं हो सकता और वह विकास नहीं कर सकता है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि समता की साधना के लिए तेजस्विता आवश्यक है। शक्ति और सामर्थ्य के अनेक रूप होते हैं तेजोलेश्या से कई काम किये जा सकते हैं तेजोलेश्या के द्वारा किसी पर विग्रह किसी पर अनुग्रह किया जा सकता है। मनुश्य की तेजस्विता गुस्से में न लगे उसकी तेजस्विता रचनात्मक कार्यों में लगे अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों की भलाई व आत्मकल्याण में लगे तो उसकी सार्थकता हो सकती है। साधु के लिए भी आवश्यक है कि साधु की शक्ति आक्रोश में न लगकर रचनात्मक कार्यों में लगे।

आचार्य तुलसी की 13वीं पुण्यतिथि 10 जून को

लाडनूं, 8 जून।

आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आचार्य तुलसी की 13वीं पुण्यतिथि 10 जून को जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में समारोह आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर देशभर से काफी संख्या में लोगों का आगमन होगा।